धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

प्रतिष्ठा में,

प्रकाशन तिथि : 09 जनवरी, 2026
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN/2001/03044 Regd.
Title Code : DELHIN09770

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

जनवरी, 2026 | माघ | सं. 2082 | अंक 294 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 समाचार दर्शन

शिव कृपा से ही जीवन में आता है माधुर्य

जीवन में माधुर्य की बहुत बड़ी आवश्यकता है मिठास हर कोई चाहता है लेकिन वह ऐसे ही नहीं आ जाती उसके लिए जब भगवान की कृपा होती है और आप अपने जीवन में कुछ नियम बनाते हैं तो जीवन मधुरता से भरने लगता है। जीवन में माधुर्य लाने के लिए कुछ नियम हैं। पहला नियम तो यह है कि जिस जीवन के अन्दर सुन्दर सुव्यवस्था है उस जीवन में मिठास भी रहेगी और प्रसन्नता भी। जो व्यक्ति अस्त-व्यस्त होकर के जिया करता है उस आदमी के जीवन में माधुर्य नहीं रहा करता न प्रसन्नता रहती है। इसलिए एक व्यवस्था बनाओ और व्यवस्था को बिगड़ने मत दो, नियमित हो जाओ। कई बार देखा जाता है योजना बनाकर एक दिन तो बहुत अच्छे ढंग से चले और दूसरे दिन नियम टूट गया। नियम अगर रोज ठीक रहा तो सेहत भी अच्छी रहेगी और जीवन भी ठीक चलेगा। नियमित और व्यवस्थित हो जाने के बाद आप हर तरह से फिट रहेंगे। जब आप नियमित व व्यवस्थित हो जायेंगे तो जीवन में संतुलन आयेगा और संतुलन से जीवन में मधुर रस धारा बहेगी। किसी चीज को पकड़ने में जितनी मधुरता होती है छोड़ने में भी उतनी मधुरता रहे। यह बहुत जरूरी है कि जिन्दगी में मिठास बनी रहे। जिन्दगी में किसी ने दो कदम चलकर साथ निभाया बहुत अच्छी बात है अब आगे साथ चलना संभव नहीं हो पा रहा तो भी कहानी को एक ऐसा मधुर मोड़ दो कि यह याद तो रखा जा सके, आगे आदमी यह तो कह सके कि मैं नहीं निभा पाया पर वह आदमी सच में बहुत ऊंचा था। सारी जिन्दगी टीस दिल में उभरती रहे कि मैं उसके साथ क्यों नहीं निभा पाया? कहते हैं कि विवाद भी हो तो इस स्थिति तक न पहुंचे कि दुबारा मिलें तो मिलकर शर्मिन्दा होना पड़े। होना ऐसा चाहिए कि मिलें तो ऐसे मिल जाएं कि जैसे पानी में दो धाराएं मिल कर एक हो जाया करती हैं जैसे शिव और शक्ति का अर्द्धनारीश्वर रूप जब वे पुरुष व प्रकृति के दो अलग रूपों में होते हुए भी एक हैं। दो अलग-अलग रूपों को मिलाकर एक कर देने वाली शक्ति ही शिव की शक्ति है। शिव और शक्ति की उपासना का महापर्व है शिवरात्रि।

भगवान शिव की पूजा के लिए शिवरात्रि ही क्यों?

यह वही रात्रि है जब भगवान शिव ने ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ऊर्जा प्रदान की। शिवरात्रि सिर्फ एक धार्मिक त्योहार ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक जागृति का उत्सव है। यह रात्रि उस पावन क्षण की साक्षी है जब शिव और पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ। यह रात्रि शिव और शक्ति के मंगल मिलन का प्रतीक है।

शिवरात्रि में क्यों करें रात्रि जागरण?

शिवरात्रि भगवान शिव के ज्योति स्वरूप के प्रकटोत्सव की रात्रि है। इस रात्रि में जागरण करने से शिव की विशेष ऊर्जा साधक भक्त के मन जीवन को ऊर्जा से भर देती है। जब शिवरात्रि की रात्रि में शिव की अपार ऊर्जा चारों तरफ अपना प्रकाश फैला रही होती है, ऐसे में शिव का ध्यान, जप, पूजन, रुद्राभिषेक अत्यंत फलदायी हो जाता है।

शिवरात्रि में चार प्रहर की पूजा का महत्व

मनुष्य के जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार प्रमुख पुरुषार्थ हैं। इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है भगवान शिव की कृपा से और शिव कृपा प्राप्ति के लिए विशेष है शिवरात्रि की चार प्रहर की पूजा। शिवरात्रि वह रात्रि है जब शिव की शक्ति, उनकी ऊर्जा विशेष रूप से सक्रिय होती है, ऐसे समय में ध्यान, पूजन और रुद्राभिषेक से भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होकर साधक भक्त की सम्पूर्ण शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण कर मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

शिवरात्रि में पूजन-जागरण से क्या मिलता है?

शिवरात्रि में शिव पूजन जागरण से भक्त के ग्रह-दोष दूर होते हैं, घर के कलह-क्लेश से मुक्ति, नौकरी-व्यापार में उन्नति, वैवाहिक जीवन में सौहार्द, नकारात्मकता से मुक्ति, मानसिक शांति के साथ भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति और मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। ●

स्वास्तिक की रचना है पूर्णतया वैज्ञानिक

सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म ही केवल धर्म है, बाकी सब मत हैं या सम्प्रदाय हैं। इसका अपना सौन्दर्य है, यह पूर्ण है, शाश्वत है। इसके सिद्धांत, उपदेश, सूत्र, मान्यताएं मौलिक हैं, इसके आदेश से निर्मित संस्थाएं भी वैज्ञानिक चिंतन से प्रेरित हैं। मंदिरों, मठों से लेकर प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व रचित स्वास्तिक चिन्ह भी पूर्णतया वैज्ञानिक तर्कसंगत सिद्धांतों पर आधारित है। प्रत्येक ईश्वर और बिन्दुओं में देवी-देवताओं का वास है। स्वास्तिक में भगवान के दर्शन होते हैं।

स्वास्तिक का अर्थ है "शुभ हो", "कल्याण हो" जो सौभाग्य, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। हिन्दू धर्म, बौद्ध चिंतन, जैन मत और सिख मान्यताओं में इसे शुभ माना जाता है। किसी भी शुभ कार्य करने से पूर्व इसकी रचना की जाती है, गृह प्रवेश हो या कोई पुण्य कार्य हो, तो स्वास्तिक बनाये जाते हैं। विशेषकर नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए इसकी रचना की जाती है। यह सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। इसकी उपस्थिति सूर्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और सृष्टि के चक्र का प्रतिनिधित्व करती है। यह शांति, सौभाग्य और शुभता का सार्वभौमिक प्रतीक है, जो सभी दिशाओं से मंगल को आकर्षित करता है।

स्वास्तिक की भुजाओं का ब्रह्माण्ड से गहरा संबंध है इसकी चार भुजाएं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार वेद, चार आश्रम तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गणेश जैसे देवताओं को दर्शाती हैं और यह जीवन के शाश्वत चक्र का प्रतीक है। यह शरीर या पदार्थ पर लगाया जाने वाला एक मंगल चिन्ह है।

इसे लक्ष्मी से भी जोड़ा जाता है, जिससे यह एक प्राचीन और शक्तिशाली मंगलकारी प्रतीक माना जाता है। स्वास्तिक में जो चार बिन्दु लगाये जाते हैं, ये मानव जीवन के अलंकार हैं, प्रथम ब्रह्म या प्रेम, दूसरा श्रद्धा, तीसरा विश्वास और चौथा समर्पण को दर्शाता है। इसी कारण स्वास्तिक मंगलकारी, शुभदायी और कल्याणकारी होने से एक दैविक और वैज्ञानिक चिन्ह है।

–डॉ. नरेन्द्र मदान

अपनायें संस्कृति संस्कार - पायें गुरुवर का प्यार

- आनन्दधाम की यही पुकार, विश्व जागरण की बहे बयार।
- ज्ञान ध्यान सत्संग की धार, करते आत्मा का उद्धार।
- धर्मादा ऋषियों का मार्ग, सेवा दान की बहे बयार।
- धर्मकोष गुरु का संकल्प, शिष्यत्व का बस यही विकल्प।
- सेवा, सिमरन व सत्संग, फलता धर्मकोष के संग।
- लेते जो गुरुमंत्र की दीक्षा, सरल बने जीवन की परीक्षा।

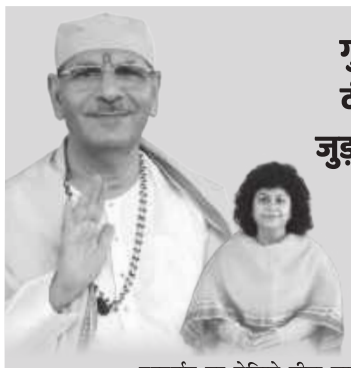

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

VISHWA JAGRITI MISSION

Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ

Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI

Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

Jaago Sudhanshu Ji Maharaj

दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्

DD NATIONAL

प्रतिदिन प्रातः 7:00 से

Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार

सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रातः 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747

www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com

info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

सद्गुरुदेव उवाच

सकारात्मक वर्तमान में छिपा है सुनहरा भविष्य

आप अपने जीवन में कुछ नियम सिद्धांत बनाओ। पूजा-जप-तप और अपने कर्म पर विश्वास रखो। विचलित होकर न रहो, किसी एक चीज को मजबूती से पकड़ो। यदि मंत्र जाप ही करना है तो गुरुमंत्र जपो, ग्रंथ पकड़ना है तो भगवान की वाणी पकड़ो, पंथ पकड़ना है तो सत्य का पंथ पकड़ो, आधार लेना है तो परमात्मा का आधार लो। यदि चक्कर ही काटना है तो एक ही चक्कर महत्वपूर्ण है कि परमात्मा के दरबार की परिक्रमा करते रहो, परमात्मा के चक्कर में पड़ गए तो संसार के चक्कर से दूर हो जाओगे। उसके नाम का सहारा लेकर चलो। जैसे उषा बेला रोज नई ताजगी लेकर आती है। इस तरह जो परमात्मा के प्रकाश से स्वयं भी प्रकाशित है और उसका नवीन प्रकाश लेकर दूसरों को भी प्रकाशित करता है, भगवान कहते हैं वही मेरा भक्त है। विद्या वह है जो मुक्त करे बंधनों से निकाल दे, कष्ट-क्लेशों से ऊपर करे, बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती।

ज्ञान सबसे बड़ा एक ही है वह है परब्रह्म का ज्ञान, इससे व्यक्ति संसार में भी सफल होता है और करतार के दरबार में भी सफल होता है। कठिनाइयां तो जीवन में आती ही रहेंगी, पर कठिनाइयां उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाती जो भगवान का भक्त है, सरल-सच्चा है, अच्छाई पर नेक-नीयत से चल रहा है, उसका कल्याण ही कल्याण है। यह निश्चित समझ लेना कि यदि आज आप अच्छा कर रहे हैं तो कल अपने आप अच्छा होकर आएगा। क्योंकि कल कभी भी कल बनकर नहीं आता, वह हमेशा आज ही बन जाता है। इसलिए जो आज अच्छा कर रहे हैं वे अपना सुनहरा भविष्य बना रहे हैं। जो कुछ मन आज बुन रहा है, वही कल आपका भविष्य बनेगा। इसलिए वर्तमान में जीएं और हमेशा शुभ और सकारात्मक सोच रखें। ●

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित
भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2026

16 से 19 जनवरी	– उल्हास नगर, महाराष्ट्र
22 से 26 जनवरी	– वरदान लोक आश्रम, थाणे, महाराष्ट्र
23 जनवरी	– बसंत पंचमी, वरदान लोक आश्रम, थाणे, महाराष्ट्र एवं आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
26 जनवरी	– गणतंत्र दिवस, वरदान लोक आश्रम, थाणे, महाराष्ट्र एवं आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
01 फरवरी	– पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
08 फरवरी	– अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
11 से 12 फरवरी	– सरसोली धाम, कुडाल (महाराष्ट्र)
14 से 15 फरवरी	– महाशिवरात्रि, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
19 से 22 फरवरी	– अकोला, महाराष्ट्र
23 फरवरी	– खामगांव, महाराष्ट्र
24 फरवरी	– अमरावती, महाराष्ट्र
03 मार्च	– होली मंगल मिलन एवं पूर्णिमा दर्शन आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
06 से 08 मार्च	– पूणे, महाराष्ट्र
12 से 15 मार्च	– सनातन संस्कृति जागरण अभियान, मेरठ, उत्तर प्रदेश
26 मार्च	– राम नवमी एवं मिशन स्थापना दिवस आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
27 से 29 मार्च	– नासिक, महाराष्ट्र
2 अप्रैल	– पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
2 से 5 अप्रैल	– पानीपत, हरियाणा
9 से 12 अप्रैल	– बैतूल, मध्य प्रदेश
23 से 26 अप्रैल	– शिमला, हिमाचल प्रदेश
01 मई	– पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
2 मई	– उल्लास पर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

प्रिय आत्मन्!

इंसान जितना ज्यादा संवेदनशील होता है उतनी ही ज्यादा चोट उसे महसूस होती है। पर ध्यान रखना कभी परिस्थितियों का गुलाम नहीं बनना बल्कि परिस्थितियों को अपना गुलाम बनाना है। मौसम तो जैसे-तैसे सामने आएगा ही लेकिन उसके लिए अपने अन्दर ही एक क्षमता पैदा करनी होगी उससे लड़ने के लिए। कांटे तो दुनिया भर में जगह-जगह होंगे ही लेकिन अपने ही पांव में जूता पहनकर चलने की शक्ति पैदा करनी पड़ेगी। अपने को ही मजबूत बनाना पड़ेगा। और जब आपके सामने परिस्थितियां विपरीत हों तो उस समय भगवान से यही प्रार्थना करना कि हे मेरे दाता! हे मेरे भगवान! चाहे मेरा आप सब कुछ छीनना पर मेरी समझ, मेरी मति, मेरी बुद्धि को कभी मुझसे मत छीनना। अक्ल काम करती रहे। अगर यह कृपा आपकी है तो मैं संसार में पहाड़ जैसी मुसीबतों का सामना कर सकता हूं। भगवान मेरी बुद्धि को सुबुद्धि बनाए रखना। मेरे मस्तिष्क का संतुलन बना रहे, मन शांत बना रहे। परिस्थितियों से मैं कभी हार न मानूं, कभी कमजोर न पड़ूं। ध्यान रखना इन्सान हारता है अन्दर से, जब अन्दर से टूटता है तो फिर बाहर वाले भी दबा लेते हैं लेकिन जब आप अन्दर से मजबूत होंगे तो बाहर की कैसी भी स्थिति हो, आप हमेशा हंसते-मुस्कराते हुए आगे बढ़ते जाएंगे।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

धर्मकोष सदस्यता अभियान

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक "**धर्मकोष**" बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

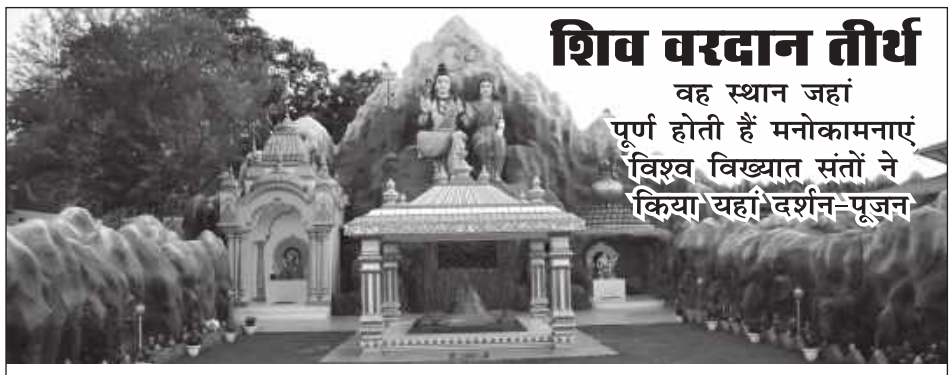

शिव वरदान तीर्थ

वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन

आनन्दधाम आश्रम की ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश-विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु सन्यासी एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक विशेष ज्योतिर्लिंग है '**भीमाशंकर**'। यह ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के संहारक और रक्षक स्वरूप को दर्शाता है। राक्षसराज कुम्भकर्ण के पुत्र भीमासुर द्वारा देवताओं को कष्ट देने पर जहां भगवान शिव ने भीमासुर का संहार किया वहीं उसकी पितृभक्ति और श्रद्धा से प्रसन्न होकर स्वयं को उसके नाम से पूजित होने का वरदान भी दिया। भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग की पूजा करने से भय, रोग और पापों से मुक्ति मिलती है। इस ज्योतिर्लिंग के पूजन से भक्तों को शक्ति और साहस मिलता है। भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग का रुद्राभिषेक करने से जीवन की अनेकानेक विघ्न-बाधाएं दूर होकर साधक भक्त को संतान सुख, भौतिक उन्नति, आध्यात्मिक प्रगति और मानसिक शांति की प्राप्ति होती है। रोग, भय निवारण के लिए भगवान शिव की करुणा कृपा प्राप्ति एवं जीवन में सर्वविध सुख-शांति के लिए शिव वरदान तीर्थ स्थित भगवान शिव के 'भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग' का दर्शन-पूजन और रुद्राभिषेक अवश्य करें। ●

संयोग-वियोग रूपी जीवन में सुख और दुःख

इस दुनिया में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसको सदा सुख ही सुख मिला हो, दुःख न मिला हो। ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जिसे मान ही मान मिला हो और अपमान के घूंट न पिए हों। संयोग-वियोग के इस संसार में पाना-खोना, लेना-देना, आना-जाना, उन्नति-अवनति, सुख और दुःख रूपी कड़वे और मीठे फल हर किसी को मिलते हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि-

देह धरे का दण्ड है सब काहू को होए।
ज्ञानी भुक्ते हंस-हंस कर और मूरख भुक्ते रोए।।

शरीर धारण किया है तो सभी को तो ये फल भोगना ही पड़ेगा, देह धरे का दंड है। लेकिन समझदार आदमी हंसता हुआ हर मौसम का सामना करता है और नासमझी रूलाती है। जिस आदमी के हाथों से आपने कभी मीठे फल खाएं हों तो कभी-कभी उसी के हाथ से कड़वे फल भी खाने

पड़ते हैं और कई बार तो यह होता है कि कोई थैंक्स कहे न कहे आपके लिए उपकार के बदले में धन्यवाद दे या न दे पर कई बार ऐसी भी स्थितियां आ जाती हैं कि आदमी ऐसा कड़वा बोल जाता है कि जिसकी उम्मीद नहीं की जा सकती है और जीवन में यह सब स्वीकार किया जाता है।

इस धरती पर यदि राम भी अवतार लेकर आए तो आंख से आंसू तो उनके भी बहे। यदि वे राज्यसिंहासन पर बैठे तो वन के कंटीले मार्ग पर भी उनको चलना पड़ा। यदि भगवान कृष्ण को संसार का सारा सम्मान मिला तो अपने ही रिश्तेदार शिशुपाल की गालियां भी भरी सभा में सुननी पड़ीं। जब अवतार नहीं बचे तो हम और आप....। हमको भी सामना करना पड़ेगा। ●

रायपुर (छत्तीसगढ़) में चार दिवसीय दिव्य भक्ति सत्संग सम्पन्न

अपने कर्म को प्राथमिकता दें और ईश्वर पर भरोसा रखें - सुधांशु जी महाराज

» सरकार ने राज्य अतिथि से किया सम्मानित » मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर गुरु भक्तों को मिला स्नेहिल आशीष

रायपुर। विश्व जागृति मिशन रायपुर मण्डल द्वारा बलबीर सिंह जुनेजा इनडोर स्टेडियम में आयोजित चार दिवसीय दिव्य भक्ति सत्संग महोत्सव का शुभारंभ पूज्य श्री सुधांशु महाराज ने दीप प्रज्वलित करके किया। इस अवसर पर महाराजश्री का स्वागत एवं अभिनन्दन पूर्व आई ए एस गणेश शंकर मिश्र एवं मण्डल के प्रधान श्री सुरेश सचदेव एवं श्री सुनील सचदेव सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने किया।

भक्ति सत्संग में उपस्थित भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्यश्री सुधांशु महाराज ने कहा कि अपने जीवन के लक्ष्य को पहचानते हुए अपना कर्म करने वाले बनकर परमात्मा की शक्ति से जुड़कर अपना मंगल कर्म करने वाले बनें। उन्होंने कहा कि मनुष्य सुख और दु:ख के आधीन है लेकिन सुख दु:ख मनुष्य के आधीन नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात है व्यक्ति मोक्ष चाहता है उसके लिए सभी को तत्व ज्ञान

चाहिए। तब तक नदी को बहना होगा जब तक वह सागर न मिल जाए, उसी तरह व्यक्ति को भी अपने लक्ष्य तक जाने के लिए नदी की तरह चलते रहें। महाराजश्री ने अपने ज्ञान में जब तक भक्ति का जन्म नहीं होगा, तब तक कल्याण नहीं होने की बात बताते हुए भक्ति में लीन होने को कहा और उन्होंने कहा जीवन में कुछ भी प्राप्त करना चाहते तो व्यास पीठ से बह रही ज्ञान गंगा को मनोभाव से सुनें भी और उसे मनन भी करें। ज्ञात हो छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर आने पर प्रदेश सरकार ने सुधांशु महाराज को राज्य अतिथि से सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि इस दिव्य भक्ति सत्संग में छत्तीसगढ़ी लोक कला मंच ने अपनी मंच प्रस्तुति देकर और मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर सत्संग समारोह में देश-विदेश से आए भक्तों को छत्तीसगढ़ की संस्कृति से जोड़ा। मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर छत्तीसगढ़-वासियों को गुरु दर्शन एवं आशीर्वचन सुनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस सत्संग कार्यक्रम में सैकड़ों भक्तों ने गुरुवर से मंत्र दीक्षा लेकर स्वयं के जीवन को नई दिशा दी। इस चार दिवसीय दिव्य भक्ति सत्संग कार्यक्रम में मिशन की उपाध्यक्षा एवं योग गुरु डॉ अर्चिका दीदी का आगमन हुआ है। इस मौके पर पूज्या अर्चिका दीदी का स्वागत एवं अभिनन्दन नारी शक्ति ने किया।

डॉ. अर्चिका दीदी ने सभी भक्तों को ध्यान के माध्यम से परमात्मा से जोड़ते हुए कहा कि अपने जीवन को कभी भी न कोसें और दूसरों को देखकर जलने की भावना को हटाते हुए परमात्मा से जुड़ें। उन्होंने कहा कि कभी भी आंतरिक मन को खराब न करें और मुस्कुराते हुए अपना जीवन यापन करें। जब भी मुस्कुराने का मौका मिले जरूर मुस्कुराएं और परम पिता परमात्मा का आभार करते हुए हमेशा सकारात्मक रहें और अपने आसपास के दु:ख के घेरा को हटाएं। इस दिव्य भक्ति सत्संग में पूज्य गुरुवर के दर्शन, सत्संग श्रवण के लिए जाने-माने राजनेता, समाजसेवी, प्रबुद्धजन एवं बड़ी संख्या में भक्तजन पधारे। रायपुर मंडल के प्रधान जी के नेतृत्व में मण्डल के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्संत सफल रहा। ●

कोलकाता के साईंस सिटी में तीन दिवसीय दिव्य पाठशाला 'अंधकार से प्रकाश की ओर' कार्यक्रम सम्पन्न

जीवन ढोंग से नहीं ढंग से जीएं, जो नहीं वह ख्वाब, जो है वह लाजवाब-सुधांशु जी महाराज

कोलकाता (पश्चिम बंगाल)। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में विश्व जागृति मिशन कोलकाता ट्रस्ट द्वारा साइंस सिटी ऑडिटोरियम में पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के सान्निध्य में तीन दिवसीय दिव्य पाठशाला 'अंधकार से प्रकाश की ओर' कार्यक्रम में पूज्य गुरुवर का स्वागत, वंदन एवं अभिनंदन कोलकाता ट्रस्ट के प्रधान श्री राधेश्याम गोयनका एवं श्री सुशील गोयनका जी के साथ अन्य गणमान्य नागरिकों ने किया।

इस कार्यक्रम के विद्यार्थी सत्र में विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए पूज्य गुरुवर ने कहा कि आप का समय बहुत कीमती है, यही वह समय है जिसका सही ढंग से उपयोग करने पर आप जीवन के हर एक ऊंचे शिखर तक पहुंच सकते हैं, इसलिए एक-एक क्षण का सदुपयोग करें,

अपने शिक्षकों की आज्ञा का पालन करें और माता-पिता भी अपनी संतान को अच्छे संस्कार दें, अपनी धर्म-संस्कृति से जोड़ें, बचपन से ही वीरों की वीरगाथाएं सुनाएं।

अपनी ओर से कोशिश करेंगे तभी वातावरण में परिवर्तन होगा। अपने परिवारों को संस्कार देकर कीमती बनाएं और जीवन के लक्ष्य को वेशकीमती बनाते हुए पुरानापन को त्याग करें और नयापन को आने दें। नया होने के लिए स्वयं को खाली करें। हम सभी चाहते हैं कि जीवन में नया माहौल मिले लेकिन उसके लिए स्वयं ही प्रयत्न नहीं करते हैं। एक अच्छे परिवार का निर्माण करते हुए शिष्टाचार के साथ अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें न कि उपहार। स्वयं के व्यवहार से संस्कार का निर्माण करें। उन्होंने कहा कि जब तक अपने अन्दर खुद से परिवर्तन लाने के लिए इच्छुक नहीं होंगे तब तक कोई भी शुभ कार्य करने में असमर्थ होंगे। विश्व जागृति मिशन ट्रस्ट कोलकाता द्वारा इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में सुन्दरकाण्ड पाठ एवं रक्त दान शिविर का आयोजन भी किया गया।

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में जहां देश के जाने-माने राजनेता, समाज सेवियों ने पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव

(संगठन) श्री रामलाल जी ने कोलकाता साईंस सिटी पहुंचकर पूज्य महाराजश्री के दर्शन कर उनके आशीवर्चन एवं मार्गदर्शन प्राप्त किए। पूज्य गुरुवर ने श्री रामलाल जी द्वारा राष्ट्र उत्थान में किए जा रहे कार्यों की तहेदिल से प्रशंसा की।

इस कार्यक्रम में सैकड़ों भक्तों ने गुरुवर से मंत्र दीक्षा लेकर अपने जीवन का नवनिर्माण करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मण्डल के प्रधान, अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

गुरुवर में है भगवान श्रीराम का क्षमाभाव

उमा क्षमा श्रापहुँ ते भारी। अपने कर्म जांहिं अपकारी। (रामचरितमानस)

भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं कि पार्वती किसी के गलती करने पर भी उसे क्षमा कर देना श्राप देने से भी बड़ा है। क्योंकि कर्म फल तो एक दिन अवश्य सामने आयेगा। आज नहीं तो निश्चिय कल। भारतीय संस्कृति और सनातन परम्परा में भगवान श्रीराम की मर्यादा, धर्म, करुणा, त्याग और क्षमा मानव जीवन के सर्वोच्च आदर्श हैं। भगवान श्रीराम के चरित्र का सबसे उज्ज्वल गुण 'क्षमा' है। क्षमा केवल अपराध को भूलना नहीं, बल्कि करुणा, धैर्य और धर्म के साथ न्यायपूर्ण आचरण करना है। क्षमा वह दिव्य गुण है जो मनुष्य को ऊंचा उठाता है। अहंकार को गलाता है और समाज में शांति स्थापित करता है। भगवान श्रीराम ने अपने जीवन में क्षमा को एक बार नहीं बनेक बार सिद्ध किया कि सच्चा बल बाहुबल में नहीं, अपितु सहनशीलता और करुणा में है।

भगवान श्रीराम का क्षमाभाव उनके पारिवारिक जीवन से ही प्रकट हो जाता है। जब माता कैकेयी द्वारा पिता दशरथ से मांगे गये वरदान के कारण उन्हें चौदह वर्षों का वनवास और राज्याभिषेक से वंचित होना पड़ा। सामान्य व्यक्ति ऐसे समय में क्रोध और विद्रोह से भर उठता, किंतु प्रभु श्रीराम ने न तो माता कैकेयी को कठोर शब्द कहे और न ही अपने भाग्य को कोसा। उन्होंने इसे पिता की आज्ञा और धर्म का पालन मानकर सहर्ष स्वीकार किया। प्रभु श्रीराम ने सौतेले भाई भरत के प्रति भी कोई कटुता नहीं रखी, जबकि राज्य उन्हीं के कारण छिना। भगवान राम के वनवास काल में भी अनेक कष्ट, अभाव और संकट आए लेकिन उन्होंने किसी को दोष नहीं दिया। सूर्पणखा द्वारा अपमानजनक व्यवहार और फिर सीताहरण का षड्यंत्र रचने के बावजूद प्रभु श्रीराम का हृदय द्वेष से नहीं भरा। उन्होंने रावण से युद्ध अवश्य किया, पर वह युद्ध व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए नहीं, अपितु अधर्म के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए था।

प्रभु श्रीराम की तरह ही मैंने अपने गुरुवर पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज में 'क्षमा' का महनीय भाव देखा। विश्व जागृति मिशन की स्थापना से लेकर अब तक धर्म, भलाई और सेवा के कार्य करते हुए भी एक नहीं अनेक बार ऐसे अवसर आये जब निर्दोष होते हुए भी संस्था पर आरोप-प्रत्यारोप लगाये गये, लेकिन हर बार पूज्य गुरुवर ने अपनी करुणा का विस्तार करते हुए उन सभी को क्षमा किया और उनके अन्तर्हृदय में जलन द्वेष की आग शांत होने की प्रभु से प्रार्थना करते हुए उनके सुख-समृद्धि से युक्त आनंदमय जीवन की मंगल कामना की।

पूज्य सद्गुरुदेव के सान्निध्य में आनन्दधाम आश्रम में महाशिवरात्रि पर्व 14 एवं 15 फरवरी, 2026 को आयोजित शिव मंगल महोत्सव में आपका सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित आमंत्रण है।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी. के दूरर्शन और संस्कार चैनल, सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से। आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

सूरत-गुजरात में चार दिवसीय विराट भक्ति सत्संग सम्पन्न

साधारण व्यक्ति को भी असाधारण इंसान बनाती है गुरु कृपा -सुधांशु जी महाराज

सूरत। गुजरात की डायमंड सिटी सूरत में विश्व जागृति मिशन बालाश्रम के तत्वावधान में रामलीला मैदान में 25 से 28 दिसम्बर, 2025 तक चार दिवसीय भक्ति सत्संग का भव्य आयोजन वे किया गया। महोत्सव का शुभारंभ विश्व जागृति मिशन के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इससे पूर्व बालाश्रम स्थित व्हाइट लोटस स्कूल से भव्य कलश एवं शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री पंकज कापड़िया, सूरत महानगर पालिका के उपमहापौर डॉ. नरेन्द्र पाटिल तथा मंडल प्रधान श्री गोविन्दभाई डांगरा ने गुरुदेव का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो व्यक्ति आंतरिक और बाहरी दोनों रूप से सुंदर होता है, वही परमात्मा का प्रिय पात्र बनता है। जब तक जीवन में रस और आनंद नहीं होता, तब तक सच्ची सुंदरता संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव आनंद और मुस्कान से परिपूर्ण रहना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे एक खिला हुआ गुलदस्ता। महाराजश्री ने कहा कि जीवन को हरा-भरा रखने के लिए परमात्मा से निरंतर जुड़े रहना आवश्यक है। भगवान से जुड़कर प्रतिदिन शांति का अनुभव करें, सांसारिक कोलाहल से दूर होकर अपने आराध्य से संवाद करें और उनकी कृपा को महसूस करें। इससे आत्मिक तृप्ति के साथ जीवन में नया एहसास उत्पन्न होता है। उन्होंने यह भी कहा कि जब किसी व्यक्ति पर गुरु और परमात्मा की कृपा हो जाती है, तब वह साधारण से असाधारण बन जाता है।

महाराजश्री ने गुरुदेव की शरण से लेकर परमात्मा के मिलन तक के विभिन्न प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन करते हुए कहा कि इस संसार में हर व्यक्ति किसी न किसी सहारे की तलाश में है, जबकि सच्चा और अंतिम सहारा केवल परमात्मा ही है। संसार की समस्त व्यवस्थाएं उसी परम सत्ता के आधार पर टिकी हैं। जीवन में जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह परमात्मा की कृपा और मुकद्दर से मिलता है। जब संसार के सभी रिश्ते-नाते टूट जाते हैं, तब केवल प्रभु का ही सहारा शेष रहता है। महाराजश्री ने आगे कहा कि बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण ही सच्ची संपत्ति है। सच्चा प्रेम वह नहीं जो बच्चों को कमजोर बनाए, बल्कि वह है जो उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करने का साहस दे। महाराजश्री ने कहा जब व्यक्ति भीतर से बदलता है, तभी समाज और राष्ट्र का उत्थान संभव है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से राष्ट्र का उत्थान होगा और गुरुकुल निर्माण से ही भारत विश्व गुरु होगा।

महाराजश्री ने जीवन में आदतों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन को व्यक्ति नहीं, बल्कि उसकी आदतें संचालित करती हैं। जैसा अंत:करण बनता है, वैसा ही व्यक्ति का स्वरूप होता है। पुरानी गलत आदतों को बदलने के लिए नई सकारात्मक आदतें अपनानी चाहिए और त्याग योग्य आदतों से वैराग्य रखना चाहिए। अच्छी आदतों से जो व्यक्ति अपने जीवन को सही ढंग से डिजाइन करना सीख लेता है, वही कीर्तिमान स्थापित करता है। शिक्षा और संस्कार के संतुलन पर जोर देते हुए महाराजश्री ने कहा कि केवल शिक्षा पर्याप्त नहीं है, सु-संस्कार भी उतने ही आवश्यक हैं। संस्कारों के अभाव में शिक्षित व्यक्ति भी समाज के लिए घातक बन सकता है। सु-संस्कारों से ही घर, परिवार, समाज व राष्ट्र स्वर्ग बनता है। इसलिए नई पीढ़ी के नव निर्माण के लिए उन्हें समय, संस्कार और मार्गदर्शन अवश्य दें।

सत्संग कार्यक्रम में आयोजित यज्ञ में पूज्य गुरुवर ने आहुतियां अर्पित कर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास, शांति और समृद्धि की मंगलकामना की। इस सत्संग कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव का दर्शन कर आशीर्वचन श्रवण करने के उद्देश्य से सुप्रसिद्ध राजनेता, समाजसेवियों के साथ देश के अन्य प्रदेशों व विदेशों से भी भक्तजन आए।

सत्संग कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम समन्वयक आचार्य श्री रामकुमार पाठक, मंडल के प्रधान व कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की सराहनीय भमिका रही। ●

अमर उजाला संवाद स्वर्णिम शताब्दी कार्यक्रम में
पूज्य गुरुवर ने दिया आशीर्वाद

गुरुग्राम (हरियाणा)। अमर उजाला संवाद स्वर्णिम शताब्दी कार्यक्रम में गुरुग्राम हरियाणा में आयोजित अमर उजाला संवाद स्वर्णिम शताब्दी कार्यक्रम में अमर उजाला के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री हिमांशु गौतम जी के विशेष निमंत्रण पर पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज ने वहां पहुंचकर उपस्थित जनों को आशीर्वाद दिया। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में हाल ही में दंडक्रम में ख्याति प्राप्त वेदमूर्ति देवव्रत श्री महेश रेखे जी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी ने गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर स्वयं को धन्य किया। ●

पूर्व राष्ट्रपति कोविंद जी से पूज्य महाराजश्री की शिष्टाचार भेंट

नई दिल्ली, 11 दिसम्बर, 2025, पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के साथ उनके आवास पर विश्व जागृति मिशन के संस्थापक पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी की विशेष भेंट हुई। राष्ट्र की सनातन चेतना विस्तार के संकल्प से पूज्य महाराजश्री एवं उनके मिशन द्वारा चलाये जा रहे ''सनातन संस्कृति जागरण अभियान'' व देश में 108 संस्कार केंद्र, 10 गुरुकुलों की स्थापना को लेकर दोनों के बीच विशेष चर्चा हुई। इस अवसर पर श्री रामनाथ कोविन्द जी के साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सविता कोविन्द जी, उनकी सुपुत्री सुश्री स्वाति कोविन्द जी भी भेंटवार्ता में सहभागी रहीं। इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने उन्हें मिशन द्वारा प्रकाशित श्रीमद्भागवत गीता' के साथ सनातन जागृति (संस्कृति एवं संस्कार की पुनर्स्थापन) पुस्तक भेंट की। ●

विहिप के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में
पूज्य महाराज श्री का दिव्य उद्बोधन

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद द्वारा 9 से 10 दिसम्बर, 2025 को आयोजित केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज को कार्यकारिणी के पदाधिकारियों द्वारा सादर आमंत्रित किया गया। उनके आमंत्रण पर पूज्य गुरुदेव जी ने वहां पधारकर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द महाराज सहित सैकड़ों संतों की उपस्थिति में बैठक को सम्बोधित करते हुए सनातन जागृति के लिए हर हिन्दू को स्वयं की पहचान कर एकजुट होने का संदेश दिया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी ने पूज्य महाराजश्री को प्रणाम कर कार्यक्रम में मार्गदर्शन देने के लिए हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। ●

आध्यात्मिक जगत की दो महान विभूतियों का आनंदधाम में मिलन

आनंदधाम। अक्षरधाम नई दिल्ली के प्रमुख, स्वामी श्री मुनिवत्सल जी महाराज एवं उनके सहयोगी 30 दिसम्बर, 2025 को आनंदधाम आश्रम में पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज से मिलने के लिए पधारे। आश्रम आकर उन्होंने शिव वरदान तीर्थ एवं आश्रम में संचालित अनेक सेवाप्रकल्पों को देखकर अति हर्षित होकर पूज्य गुरुवर द्वारा सनातन धर्म के लिए किये जा रहे कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। इस अवसर पर दोनों संतों ने धर्म- संस्कृति और सनातन जागृति के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता को दोहराया। ●

''धर्मादा'' अपनी कमाई में बरकत के लिए धार्मिक कार्यों में दान करें

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धार्मिक कार्यों से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है– 'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आनन्दधाम कामधेनु गौशाला में गौदान और गौ सेवा कर पुण्य कमाएं

सनातन संस्कृति में गाय को माता के रूप में सम्मान दिया गया है। गौसेवा और गौदान भारतीय संस्कृति की आत्मा है। हमारे वेद, पुराण और स्मृति ग्रंथों में गाय को करुणा, समृद्धि और धर्म का सजीव प्रतीक माना गया है। गौसेवा और गौदान केवल धार्मिक कार्य नहीं, अपितु ये सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक जीवन को संतुलित करने वाला महान कार्य है। गाय केवल दूध देने वाली पशु नहीं, अपितु मानव जीवन की आधार शिला है। गाय के दूध से प्राप्त घी, दही और मक्खन मानव के लिए अमृत समान हैं। गोमूत्र और गोबर का उपयोग आयुर्वेद, जैविक खेती और पर्यावरण संरक्षण में अत्यंत लाभकारी है। धार्मिक दृष्टि से कहा गया है कि गौ के शरीर में सभी देवी-देवताओं का वास होता है। गौसेवा करने से मनुष्य के पाप नष्ट होते हैं और पुण्य की वृद्धि होती है। जहां गौसेवा का इतना ज्यादा महत्व बताया गया है वहीं गौदान को शास्त्रों में सबसे बड़ा दान माना गया है। कहा जाता है कि गौदान करने से जीवन के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। गौदान का अर्थ केवल गाय दान करना ही नहीं, अपितु उसके साथ उसके आहार की व्यवस्था करना भी है। गौदान से दान कर्ता के जीवन में धन, संतान और यश की वृद्धि होती है। विश्व जागृति मिशन द्वारा आनंदधाम आश्रम में संचालित कामधेनु गौशाला में गौदान और गौसेवा के लिए गौ-ग्रास इत्यादि की व्यवस्था कर अनंत पुण्य कमाएं। ●

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि "विश्व जागृति मिशन-गौशाला" के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

विश्व जागृति मिशन द्वारा कंबल वितरण

पूज्य सद्गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद से विश्व जागृति मिशन द्वारा ठंड से ठिठुरते गरीब, जरूरतमंद लोग जो फुटपाथों पर जाड़े की रात बिताते हैं उन्हें ठंड से राहत पहुंचाने के लिए मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा रात्रि में स्थान-स्थान पर घूमकर कंबल दिया जाता है। यह कार्य मिशन के प्राय: सभी मंडलों के कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है। 30 दिसम्बर 2025 मंगलवार को ओंकारेश्वर महादेव मंदिर में जहां श्रद्धेया डॉ. अर्चिका दीदी द्वारा गरीब जरूरतमंदों को कम्बल वितरण किया गया। वहीं कृष्णा नगर दिल्ली के राधा माधव मंदिर के प्रांगण में विश्व जागृति मिशन पूर्वी दिल्ली मंडल द्वारा असमर्थ, असहाय व दिव्यांग जनों को ठिठुरती ठंड से राहत के लिए शाल, जुराब एवं नाश्ता प्रसाद वितरित किया गया। ●

महर्षि वेदव्यास विद्यापीठ

आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला, नई दिल्ली-41

प्रवेश आमन्त्रित
सत्र 2026-27

पूज्यश्री सुधांशुजी महाराज के सान्निध्य में आनन्दधाम आश्रम, दिल्ली में स्थापित महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ में छठी (प्रथमा प्रथमवर्ष), सातवीं (प्रथमा द्वितीयवर्ष), आठवीं (प्रथमा तृतीयवर्ष), नवमी (पूर्वमध्यमा प्रथमवर्ष), ग्यारहवीं (प्राक् शास्त्री), शास्त्री प्रथमवर्ष एवं आचार्य प्रथमवर्ष (एम.ए.) कक्षाओं तक प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। इस वर्ष फॉर्म शुल्क 100/- रुपये है।

आवेदन-पत्र भरने की अन्तिम तिथि 18 मार्च, 2026 है तथा विद्यार्थी अपने अभिभावक के साथ दो फोटो, सत्यापित एवं मूल प्रमाणपत्रों सहित 24 मार्च, 2026 को प्रात: 08 बजे आश्रम में परीक्षा हेतु उपस्थित हों।

परिश्रमी एवं समर्पित विद्यार्थियों का संस्था में भविष्य उज्जवल है

चयन विधि : कक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर साक्षात्कार के लिए बुलाये गये विद्यार्थियों में से चयन - चयन समिति का निर्णय अन्तिम।

प्रवेश सम्बन्धी इस वर्ष गुरुकुल में प्रवेश के लिए दो व्यवस्थाएं हैं-

i. जो विद्यार्थी शिक्षा पूर्ण करने के बाद विश्व जागृति मिशन में ही सेवा करेंगे, उन्हें सभी सुविधाएं नि:शुल्क मिलेंगी, इसके लिए उन्हें बाण्ड भरना होगा।

ii. जो विद्यार्थी वर्ग एक (i) में इच्छुक नहीं, उन्हें शिक्षा समाप्ति तक प्रत्येक वर्ष मासिक 4000/- रुपये राशि गुरुकुल को देनी होगी।

सम्बद्धता : छठी से आठवीं तक श्री गोस्वामी गिरिधारीलाल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानम् एवं नवमीं से आचार्य तक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शिक्षा : सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ-साथ वेद, पुराण, गीता, संगीत, योग, कम्प्यूटर, कब्बडी एवं अन्य खेलों का प्रशिक्षण।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्री दौलतराम कटारिया (प्रधान) - 9312243623
डॉ. नरेन्द्र मदान (महामंत्री) - 8882051156
अन्य दूरभाष : 9716282446, 9313320224, 9958038081

आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-110041

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं-

"VISHWA JAGRITI MISSION" का A/c No. 916010029741912 Axis Bank, East Punjabi Bagh, New Delhi-110026, IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org याव्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।

(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

आनंदधाम में सम्पन्न हुआ नववर्ष 2026 उत्तरायण पर्व महोत्सव

अच्छे संकल्प करें और उन्हें वर्ष भर निभाएं - सुधांशु जी महाराज

• नवप्रभात यज्ञ से आनंदधाम में नववर्ष का शुभारम्भ • नववर्ष पर गुरुवर एवं डॉ. दीदी ने गरीबों को बाटें कम्बल

आनंदधाम, नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय नववर्ष के उपलक्ष में 01 जनवरी, 2026 को आनंदधाम आश्रम में कुंभ मेले जैसा दृश्य था। पूरे आश्रम को फूलों-गुब्बारों और रंग-बिरंगे बैनर्स से सजाया गया था। इस अवसर पर आश्रम स्थित सभी मंदिरों की शोभा देखते ही बन रही थी। विशेषकर शिव वरदान तीर्थ तो ऐसा लग रहा था जैसे कि साक्षात भगवान शिव ने देवलोक के देवी-देवताओं के साथ यहां डेरा जमा लिया है। ढोल-नगाड़ों, बैंड-बाजों से आश्रम में खुशी थी। भक्तों के खिले चेहरे एक नई आशा के सूचक थे, पीतवस्त्रों को धारण किए गुरुकुल के बच्चों की सक्रिय भागीदारी से आनंदधाम का वातावरण अत्यंत मनमोहक, उल्लासपूर्ण एवं आकर्षक बन गया।

पूज्य महाराजश्री के आश्रम में शुभागमन की प्रतीक्षा में गुरुकुल एवं उपदेशक महाविद्यालय के छात्र आश्रमवासी और भक्तजन पलक पांवड़े बिछा रखे थे। आश्रम में गुरुवर, गुरुमाँ एवं डॉ. अर्चिका दीदी के दर्शन से सभी के चेहरे प्रेम-प्रसन्नता और भक्ति के प्रकाश से खिल उठे।

आश्रम में शुभागमन पर पूज्य गुरुदेव ने देवदर्शन-पूजन कर नवप्रभात यज्ञ में यज्ञ भगवान को आहुतियां देकर सर्वमंगल की कामना की। यज्ञ स्थली में गुरुवर के साथ गुरुमाँ को आहुतियां देते देखकर भक्तजन भावविभोर हुए। यज्ञ के उपरांत गेट नं० 4 पर स्थित भगवान गणपति जी के द्वार से रथ में विराजमान पूज्य गुरुवर एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के साथ मंगल यात्रा प्रारम्भ हुआ जो पूरे आश्रम की परिक्रमा करते हुए शिव वरदान तीर्थ में सम्पन्न हुई। वहीं पर शिवालय में पुष्प अर्चन किया गया और सभी भक्तों पर पुष्प वर्षा की गई। तदुपरांत गरीब जरूरतमंदों को कम्बल वितरित किये गये।

नववर्ष के मांगलिक अवसर पर भजनों से सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। मंच में गुरुवर एवं श्रद्धेया डॉ. अर्चिका दीदी के पधारने पर गणमान्य जनों द्वारा पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर भक्तों को सम्बोधित करते हुए डॉ. अर्चिका दीदी ने कहा दुनिया में दो तरह के लोग हैं। एक सम्मान पाते हैं और दूसरे दुत्कार। अब यह आप पर निर्भर

हैं कि आप कैसा बनना चाह रहे हैं, आप जैसा बनना चाहते हैं वैसा ही सोचिए और वैसे ही कार्य करिए। अच्छा बनने के लिए प्रेम सम्मान पाने के लिए अच्छी आदतों को विकसित कीजिए। जितनी अच्छी आदतें होंगी उतना ज्यादा आपका विकास होगा। अच्छी आदतें डालकर अपनी कीमत बढ़ाइए। अपने स्वभाव और अपनी योग्यता पर विश्वास रखिए। अपने शरीर पर ध्यान दीजिए, स्वास्थ्य को प्राथमिकता दीजिए। हंसते-मुस्कराते हुए कार्य कीजिए। अपने मन में भक्ति भाव को जगाइए। अपने इष्ट देव और गुरूदेव पर श्रद्धा रखिए, इन पर श्रद्धा से सिद्धि सफलता मिलते देर नहीं लगती, इस लिए हर दिन अपने आसन पर बैठकर अपना आसन सिद्ध कीजिए और ध्यान में परमात्मा और गुरुदेव की शक्तियों को अपने अंदर आमंत्रित कीजिए।

आनंदधाम में नववर्ष पर उत्तरायण पर्व महोत्सव मनाने के लिए आये भक्तों को आशीर्वाद देते हुए पूज्य गुरुवर ने कहा उत्तरायण के नव दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय नववर्ष 2026 के पावन अवसर पर आए हुए सभी भक्तों को शुभ मंगल कामना। यह नववर्ष आप सबको धन-धान्य और सुख-समृद्धि से आनंदित करे, प्रभु की कृपा आप सभी पर सदैव बनी रहे, ऐसी कामना करता हूं। महाराजश्री ने आगे कहा हमारे देश में उत्तरायण और दक्षिणायन को बहुत महत्व दिया गया है। उत्तरायण में दिन बड़े होते हैं और रातें छोटी होती हैं तथा दक्षिणायन में दिन छोटे व रातें बड़ी होती हो जाती हैं। उत्तरायण प्रकाश के बढ़ने का पर्व है। प्रकाश में व्यक्ति ज्यादा ऊर्जा प्राप्त करता है और ज्यादा कार्य करता है, इसलिए वह उत्तरोत्तर उन्नति की ओर बढ़ता जाता है। उत्तरायण का पर्व हमें बसंत की ओर ले जाता है और यहीं से पर्वों की शुरुआत हो जाती है और जीवन में आनंद उत्सव बढ़ने लगता है।

जीवन में आनंद उत्सव बढ़ाने के लिए आप नववर्ष पर अच्छे संकल्प करिए और ऐसे संकल्प करिए जिन्हें आप पूरा वर्ष निभा सकें जैसे आपने एक संकल्प लिया कि मुझे अपने आरोग्य पर काम करना है, अपनी सेहत पर काम करना है तो क्या खाना है और क्या नहीं खाना है, इसका पूरा डाइट प्लान बनाइये। अपनी नींद पूरी लीजिए, व्यायाम, प्राणायाम, सैर इत्यादि नियमित कीजिए, चिंता तनाव से दूर रहिए, हर समय खुश रहने की आदत बनाइये। निराशा-निरुत्साह से दूर रहकर हमेशा आशा-उत्साह में रहिए। हर दिन अपने अंदर उत्साह जगाइए, नित्य खुद को शाबासी दीजिए और प्रतिदिन स्वयं को और अधिक मजबूत बनाइए। झूठी शान-शौकत से बचिए, इससे जिन्दगी की शान बिगड़ जाती है। वो चीजें खरीदिए, जिनकी कीमत रोज बढ़ती हो, उसे मत खरीदिए जिसकी कीमत रोज घटे। अपने महीने भरके खर्च को डायरी में लिखिए इससे पता चलेगा कि कौन सा खर्च आपका आवश्यक था और कहां अनावश्यक खर्च हुआ, इससे आप अनावश्यक खर्चों पर सुधार कर सकेंगे और इस तरह से स्वास्थ्य में, धन में व जीवन के अन्य क्षेत्रों में थोड़ा-थोड़ा लगातार सुधार करने से एक दिन ऐसा आयेगा जब आपका पूरा जीवन चमत्कृत हो जायेगा। नववर्ष पर अच्छे संकल्प कर और उन संकल्पों को निभाकर अपने जीवन को सौभाग्यमय, आरोग्यमय, प्रेममय और सुखमय बनाइए।

उत्तरायण के इस नववर्ष महोत्सव को सोशल मीडिया पर लाइव कार्यक्रम होने से पूज्य गुरुदेव के दर्शन और आशीर्वचन श्रवण करने का लाभ देश-विदेश के उन भक्तों को भी मिला जो प्रत्यक्ष रूप से आनंदधाम आश्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

सत्संग के उपरांत सिद्ध शिखर के सामने महाआरती की गई। भण्डारे प्रसाद के साथ कार्यक्रम का सुखद समापन हुआ। मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी के नेतृत्व में सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा। ●

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "**धर्मदूत**" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान